International Journal of Sanskrit Research 2016; 2(2): 24-26

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2016; 2(2): 24-26
© 2016 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 25-01-2016
Accepted: 26-02-2016

श्रीमती काजल सक्सैना
एम.ए. (संस्कृत) एवं नेट,
वरिष्ठ अध्यापक
शा.म.ल.बा.क.उ.मा.वि.
मुरार, ग्वालियर

Correspondence
श्रीमती काजल सक्सैना
एम.ए. (संस्कृत) एवं नेट,
वरिष्ठ अध्यापक
शा.म.ल.बा.क.उ.मा.वि.
मुरार, ग्वालियर

अथर्ववेद में सर्वरोगनाशक दिव्य मणि शङ्ख

श्रीमती काजल सक्सैना

अथर्ववेद में अनेक प्रकार की मणियों का प्रयोग तथा उसकी महत्ता अनेक सूक्तों में वर्णित है। वनस्पतियों एवं औषधियों से निर्मित मणियों का उल्लेख अथर्ववेद में विस्तार पूर्वक किया गया है। अथर्ववेद का कथन है कि प्रत्येक वृक्ष में कुछ गुण होते है यही गुण उसकी शाखा और पत्तों आदि में भी होते है। उस वृक्ष के फल आदि के सेवन से जो लाभ प्राप्त हो सकता है। वहीं उसकी शाखा आदि को पास में रखने या शरीर के किसी अंग पर बाँधने पर भी प्राप्त हो सकता है। इसलिए कुछ विशेष वृक्षों के मनके बनाकर उसे शरीर पर ताबीज की तरह बाँध लेते है या उन्हें गले में लटका लेते है। विशेष वृक्षों में विद्यमान सभी गुण उनके मणियों के द्वारा भी प्राप्त किये जा सकते है। वृक्ष जिन रोगों आदि को दूर करता है। उसकी मणियाँ भी उन रोगों को दूर कर सकती है। ऐसी ही एक विशेष मणि का वर्णन अथर्ववेद में किया गया है। जिसके कई गुणकारी प्रयोग वेदों में वर्णित है। वह मणि शंख मणि के नाम से जानी जाती है।

शंख की औषधि बनाकर उसका विविध रोगों को दूर करने के लिए कार्य में उपयोग करने का विषय वैद्यशाखा में अनेक स्थानों में है। वैद्यशास्त्र ग्रन्थों में जो इसके नाम दिये है उनमें 'पूतः' शब्द है। इसका अर्थ 'पवित्र' है। स्वयं पवित्र होता हुआ जहाँ जाये वहाँ निर्दोषता करने वाले इस शंख का उपयोग औषधि क्रिया में होता है।

शंख से रोग और मतिहीनता को तथा पीड़ा करने वाले रोगों को हम दूर करते है। यह शंख सब रोगों की औषधि है। इसलिए यह मोती के समान तेजस्वी शंख पाप से हमें बचावें ।

शङ्खेनामीवाममतिं शङ्खे नोत सदान्वाः। शङ्खो नों विश्वभेषजः कृशनः पात्वंहसः।।[१]

इस शंख से आम के कारण उत्पन्न होने वाले रोग दूर होते है। बुद्धि की सुस्ती हट जाती है, शंख से शरीर की अन्य पीड़ा भी हट जाती है। यह तेजस्वी शंख हमें रोगों से बचाता है। कौशिक सूत्र में विनियोग है कि उपनयन संस्कार के बाद दीर्घायु के इच्छुक बालक को शंख मणि अभिमंत्रित करके बांधे। [२]

नक्षत्रकल्प में वर्णन है कि शंखमणि वारूणी अर्थात् जल संबंधी महाशान्ति के लिए है। जल के भय से रक्षा के लिए यह मणि बाँधी जाती है। शंखमणि को सर्वरोग नाशक कहा गया है। शंखमणि आयुवर्धक है। यह रोगकृमियों को नष्ट करती है। यह दीर्घायु, तेज और बल देती है।

शंख प्राणी है :– शंख केवल निर्जीव स्थिति में बाजार में बिकता है, परन्तु यह प्राणी का शरीर अथवा शरीर का आवरण है। यह प्राणी के साथ बढ़ता है। यह हड्डी के समान होता है, कुछ अन्यान्य रासायनिक भेद अवश्य होते है। इसलिए यह केवल हड्डी जैसा ही नहीं होता। यह जीव भी है। ऐसा अथर्ववेद में बताया गया है :–

देवानां अस्थि कृशनं बभूव, तत् आत्मन्वत् अप्सु अन्तः चरति । [३]

देवों की हड्डी ही शंख रूप में परिणत हुई है। शंख आत्मा वाला अर्थात् जीव धारी प्राणी है। दिव्यगुणों से युक्त हड्डी जैसा परन्तु उस हड्डी के घर के अंदर रहने वाला यह प्राणी ही है। इसके इस घर जैसे शंख के जो औषधि गुण है वे ही इस में सूक्त बताये गये हैं ।

वाताज्जातो अन्तरिक्षाद्विद्युतो ज्योतिषस्परि । स नो हिरण्यजाः शंखः कृशनः पात्वंहसः ।।[४]

शंख की उत्पत्ति :–

शंख की उत्पत्ति कैसे हुई इस परिप्रेक्ष में पौराणिक ग्रन्थ कहते हैं कि सृष्टि से आत्मा, आत्मा से प्रकाश, प्रकाश से आकाश, आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल और जल से पृथ्वी की

उत्पत्ति हुई है। इन सभी तत्वों से मिलकर शंख का निर्माण हुआ है। ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार शंख सूर्य और चन्द्र के समान देव स्वरूप है। इसके अग्र भाग में गंगा सरस्वती, पृष्ठ भाग में वरूण और मध्य में स्वयं ब्रह्मा जी विराजमान है।

भागवत पुराण के अनुसार सांदीपनी ऋषि आश्रम में कृष्ण की शिक्षा पूरी होने पर उन्हें गुरू दक्षिणा लेने का आग्रह किया । तब ऋषि ने कहा समुद्र में डूबे हुए मेरे पुत्र को ले आ ओं श्रीकृष्ण ने समुद्र तट पर जाकर शंखासुर को मारने से उसका खोल अर्थात शंख शेष रह गया था । मान्यता है कि उसी से शंख की उत्पत्ति हुई । शायद उसी शंख का नाम पांचजन्य है।

वैसे तो शंख कई प्रकार के होते है। लेकिन जिस घर में दक्षिणावर्ती शंख होता है और उसे नियमित रूप से इस्तेमाल में लाया जाता है। उस घर से नकारात्मक ऊर्जा दूर रहती है। ब्रह्मवैवर्त पुराण में शंख में जल भर कर रखने और उसे कुछ समय पश्चात उस जल से पूजन सामग्री धोए व बचे हुए जल को घर में छिडकने से वातावरण शुद्ध होता है और किसी भी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा भवन पर नहीं टिक सकती है।

शंख के गुण :–

वैद्यशास्त्र ग्रन्थों में इनके गुण निम्नलिखित प्रकार के कहें गये है :–

शंखकूर्मादयः स्वादुरसपाका मरून्नदः।
शीताः स्निग्धा हिताः पित्ते वर्चस्याः श्लेष्मवर्धनाः।।[५]

शंख स्वादुरस, वायु को हटाने वाला, शीत, स्निग्ध, पित्त विकार में हितकारी तेज को बढ़ाने वाला और श्लेष्मा बढ़ाने वाला है।

कटुः शीतः पुष्टिवीर्यबलदः गुल्मशूलकफ श्वासविषघ्नश्च।[६]

यह कटु शीत, पुष्टिकारण, वीर्यवर्धक, बल बढाने वाला, गुल्म रोग दूर करने वाला, शूल हटाने वाला, कफ रोग और श्वास दूर करने वाला और विष दूर करने वाला है। शंख से शंखद्रव, शंखभस्म, शंखचूर्ण, शंखवटी आदि अनेक औषधि विविध रोग दूर करने के लिए बनाए जाते है।

अंहसः पातु– शरीर में रोग रहने से मनुष्य को पाप की ओर प्रवृत्ति होती है, शंख की औषधि सेवन करने से यह पाप प्रवृत्ति दूर होती है और निरोग होने से मनुष्य के मन की प्रवृत्ति पुण्य कर्म में हो जाती है।

विश्वभेषजः – यह बहुत रोगों की औषधि है। अर्थात् शंख की औषधि से बहुत सारे रोग दूर हो जाते है।

आयुष्प्रतरणः– आयुष्य के पार ले जाने वाला अर्थात् पूर्ण आयु देकर बीच में आने वाले रोग रूपी विघ्नों को हटाने वाल शंख है।

देवासुरेभ्यः हेत्या पातु– देवों और असुरों से जो रोग या पीड़ा होना संभव है, उससे शंख बचाता है। जल, अन्न आदि देवता है, जिनका सेवन मनुष्य करता है और जो दोष इनमें होते है उनके कारण शरीर रोगी हो जाता है। आसुर और राक्षस भाव इंद्रियों और मनों के अन्दर प्रबल होते है और इस कारण मनुष्य बीमार होता है। इन सब रोगों के दूर करने लिए शंख की औषधि उत्तम है।

अमीवां शंखखेन – आम अर्थात् अन्न के अपचन से होने वाले अभीव कहे जाते है। इन रोगों को शंख से दूर किया जाता है। अर्थात् शंख से पाचन शक्ति बढ़ जाती है और आम के दोष हट जाते है।

अमतिं शंखखेन– मति, बुद्धि अथवा मन के कुविचार भी पूवोक्त आम के कारण ही होते है। शंख से आम के दोष दूर होते हैं और उक्त कारण से मन के बुरे विचार दूर होते है और पापप्रवृत्ति भी हट जाती है।

शंखखेन सदान्वाः – शरीर में हर एक अवयव में जिन रोगों में बड़ा दर्द हो जाता है । वे रोग सदान्वाः कहे जाते है। इसमें सदा रोगी चिल्लाते रहते है। इस प्रकार के रोगों को शंख दूर करता है।

समुद्रात् जशिषे– यह समुद्र से उत्पन्न होता है। जल से उत्पत्ति है। इसलिए यह शीत वीर्य है। गुणों में शीत है।

सोमात् जज्ञिषे – सोम अर्थात् औषधियों अथवा चन्द्र से उत्पन्न होने के कारण गुणकारी रोग दूर करने वाला और शीतगुण प्रधान है।

हिरण्यजः– स्वर्ण से उत्पन्न होने के कारण बलबर्धक आदि गुण इसमें है।

विद्युत् – विद्युत आदि तेजों से उत्पन्न होने के कारण यह शरीर का तेज बढ़ाने वाला है।

रोग कृमियों और उनसे होने वाले विविध रोगों को दूर करने के लिए भी शंख की औषधि का वर्णन है।

रक्षांसि– जिन रोग–जन्तुओं से शरीर क्षीण होता है। उससे उत्पन्न होने वाले सब रोग शंख के सेवन से दूर होते है।

अत्रिन् – जिन रोग में बहुत अन्न खाने पर भी शरीर की पुष्टि नहीं होती, खून कम होता है। मास आदि सप्त धातु क्षीण होते है। भस्मरोग तथा उसी प्रकार के अन्य रोगों के बीजों को अत्रिन कहा जाता है। इस रोग को भी शंख मणि द्वारा ठीक किया जा सकता है। ।

उपसंहार :–

हम कह सकते है कि अथर्ववेद में शंखमणि एक अद्भुत मणि के रूप में उल्लेख किया गया है। शंखमणि के लिए अथर्ववेद के मन्त्रों में विभिन्न विशेषणों का प्रयोग हुआ है। जिससे उसके गुणकारी प्रयोगों का ज्ञान होता है। शंखमणि के विषय में विद्वानों ने इसके कुछ दिव्य प्रयोग भी बताएं है । जैसे –

गर्भवती महिला के लिए लाभकारी – शंख के जल से शालिग्राम को स्नान कराए और उसके बाद उस जल को गर्भवती स्त्री को पिला देने से होने वाला बच्चा पूर्ण स्वस्थ रूप से पैदा होता है।

वाणी दोष को दूर करने के लिए लाभकारी – यदि कोई बोलने में असमर्थ है या किसी भी प्रकार का कोई वाणी दोष है तो शंख बजाने से लाभ मिलता है। शंख बजाने से कई तरह के फेफड़े के रोग जैसे दमा, संक्रमण क्षय, दिल की बीमारी, पेट की बीमारी और अस्थमा आदि रोगों से निजात मिलता है। शंख बजाने से पूरे शरीर में वायु का प्रभाव अच्छे तरीके से होता है। जिससे हमारा शरीर निरोगी हो जाता है।

सन्तान प्राप्ति के लिए उपयोगी – जिन महिलाओं को संतान न होने की समस्या है उन्हें यदि नियमित रूप से दो दक्षिणावर्ती शंख में जल डालकर पिलाया जाए तो संतान प्राप्त हो सकती है।

धन की प्राप्ति – दक्षिणावर्ती शंख को पूजा कक्ष में रखकर उसका विधिवत पूजन करने से घर की आर्थिक स्थिति सही बनी रहती है। एवं परिवार में आपसी प्रेम का अच्छा वातावरण बना रहता है।

जीवाणुओं का नाश करने में सहायक – शंख की ध्वनि 200 मीटर के वातावरण में रहने वाले जीवाणुओं को मारने में सहायक है। जो अन्य किसी तरीके से नहीं मारे जा सकते है। 1928 ई. में बर्लिन विश्वविद्यालय ने शंख ध्वनि का अनुसंधान करके यह सिद्ध किया कि इसकी ध्वनि कीटाणुओ को नष्ट करने की उत्तम औषधि है।

हृदय रोगी के लिए यह रामबाण औषधि है। दूध का आचमन कर कामधेनू शंख को कान के पास लगाने से ऊँ की ध्वनि का अनुभव किया जा सकता है। यह सभी मनोरथों को पूर्ण करती है। यर्जुवेद में कहा गया है कि यस्तु शंखध्वनिं कुर्यात्पूजाकाले विशेषतः वियुक्तः सर्वपापेन विष्णुनां सह मोदते अर्थात पूजा के समय जो व्यक्ति शंख ध्वनि करता है। उसके सारे पाप नष्ट हो जाते है।

महाराष्ट्र में पानी में शंख घोलकर छोटे बच्चों को पिलाते है। जिससे छोटे बच्चों की कई बीमारियां दूर हो जाती है। बच्चों के गले में भी यह शंख मणि बाँधने का विधान है। अथवा छोटे शंख को स्वर्ण में जड़ कर गले के आभूषण बनाकर पहनाया जाता है। इससे लाभ होता है। ऐसा अनुभव किया गया है ।

इस प्रकार तेज, बल और दीर्घआयु की प्राप्ति शंख से होती है। इसके विभिन्न प्रयोगों के द्वारा व्यक्ति को अनेक लाभ होते है। इसीलिए इसका एक दिव्यमणि के रूप में उल्लेख है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :–

१. अथर्ववेद काण्ड ४ सू. १० मंत्र ३
२. कौशिक सूत्र ७.६, ७.६
३. अथर्ववेद काण्ड ४ सू. १० मंत्र ७
४. अथर्ववेद काण्ड ४ सू. १० मंत्र १
५. सुश्रुत, सू. ४६
६. रा.नि.व. १६